23-6-2013 **ओमशान्ति** **ओ. आर. सी.**

मम्मा निमित्त भोग तथा वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश - दादी गुल्जार

आज जब हम बाबा के पास वतन में गई तो आज बाबा अपने कमरे में अपनी गद्दी पर बैठने के बजाए खड़े हुए थे, जैसे ही मैं पहुंची तो बाबा ने कहा आओ बच्ची आओ, ऐसे कहते बांहों में समा लिया। फिर बाबा ने कहा कि बच्ची आज सभी बच्चों की याद ले आयी हो ना! तो मैंने कहा जी बाबा, सभी बच्चे आपको बहुत याद करते हैं। तो बाबा ने कहा कि याद तो बाबा भी करता है। ऐसे कैसे होगा कि बच्चे याद करें और बाबा याद ही नहीं करें। देखो बच्ची, बच्चों को बाबा कैसे याद करता है! तो कुछ बच्चे बाबा की गोदी में आ गये और कुछ बच्चे बाबा की बाहों में आ गये, बाबा उनके माथे पर हाथ फिराते बहुत प्यार कर रहे थे।

फिर बाबा ने कहा देखो, आज तो मम्मा का दिन है, बाबा तो मिलता ही है लेकिन आज मम्मा के पास जाओ। तो मम्मा भी सामने खड़ी थी, हम मम्मा के पास गये, तो मम्मा ने बहुत प्यार भरी दृष्टि देते यही कहा कि बाबा का कहना और बच्चों का करना, यही मम्मा चाहती है। बाबा के मुख से जो डायरेक्शन निकला, जो बाबा ने मुरली में कहा वो हरेक बच्चे को करना है। बाबा का कहना और बच्चों का करना, ऐसा जब मम्मा देखती है तो मम्मा बहुत दिल से प्यार करती है। वाह बच्चे वाह! आगे चलकर भी सब बच्चे वाह-वाह बनेंगे तो हमारा भारत वाह-वाह हो जायेगा। आज बाबा और मम्मा दोनों ही साथ में थे और मम्मा सभी बच्चों को बहुत प्यार कर रही थी। मुझे भी मम्मा ने बहुत प्यार किया और कहा कि तुम सभी बच्चों की याद लाई हो ना! तो मम्मा ने बहुत बड़े-बड़े हाथ करके, भाकी पहनते हुए सभी को बहुत-बहुत प्यार किया। फिर मम्मा ने कहा बच्चे तो बहुत-बहुत याद आते हैं, एक-एक को मम्मा याद करती है। कभी किसी ग्रुप को याद करती है, तो कभी किसी ग्रुप को याद करती है लेकिन मम्मा सुबह को अमृतवेले हर एक ग्रुप को मिलती है और हरेक को सेन्टरवाइज़ या ग्रुपवाइज़, जो सर्विसएबुल हैं, उन एक-एक ग्रुप को बुलाती है और उन्हों को बहुत प्यार देती है। मम्मा ने कहा जिस बच्चे को जो ताकत चाहिए, जो शक्ति चाहिए संकल्प द्वारा वह शक्ति मैं उनमें भरती हूँ। मम्मा ने कहा मैं इसी काम में बिजी रहती हूँ।

मम्मा ने कहा मुझे बच्चे प्यारे हैं और बच्चों को मम्मा प्यारी है, प्यार नजदीक ले आता है। तो मम्मा ने कहा आज एक-एक बच्चे को नाम लेकर मम्मा का याद और प्यार देना और कहना कि मम्मा की यही शिक्षा है - बाबा का कहना और बच्चों का करना, बाबा की कही हुई एक भी बात मिस न हो जाए। बस यही याद रखना।

जैसे अभी आप यहाँ लाइन में बैठे हो, ऐसे छोटा छोटा ग्रुप वतन में इमर्ज हुआ और सभी के माथे पर हाथ घुमाते हुए मम्मा ने कहा, सदा दिल में बाबा-बाबा रखना और अपने दिल को सदा खुश रखना, कोई भी बात हो लेकिन दिल मायूस न हो, दिल खुश रहे। बात से बात होती है लेकिन चेहरे पर मायूसी न आवे। सदा खिला हुआ चेहरा रहे, जैसे खिला हुआ गुलाब का फूल कितना प्यारा लगता है, ऐसे हरेक का फेस हो जो बाबा देखे। तो बोलो, सभी के ऐसे खुशमिजाज़ चेहरे हैं ना। अगर कुछ हो भी गया तो कहो मम्मा ये हो गया, बाबा ये हो गया, दादी ये हो गया, बस इतना कहकर खत्म करो। बात आई और गई, कई दिनों तक वह बात दिल में नहीं रहे। दिल में सिर्फ एक बाबा रहे। कभी कोई यह न समझे मैं अकेला हूँ, दिल में बाबा को बिठाया है ना! तो साथी हुए ना, अकेले नहीं बाबा साथ है, बाबा दिल में है। वैसे भी सबसे नजदीक दिल है, और बाबा तो दिल में ही बैठा हुआ है। तो बाबा-बाबा कहो तो वह हाज़िर हो जायेगा फिर उससे मिलते रहो और बातें करते रहो। ऐसे अपने को बाबा के समान और मम्मा के समान बनाते चलो। उसके बाद मम्मा ने भोग स्वीकार किया, आज भोग बाबा को हमने नहीं खिलाया, मम्मा ने बाबा को खिलाया क्योंकि आज विशेष मम्मा का पार्ट था। तो मम्मा ने बहुत प्यार से गिट्टी बनाकर बाबा को खिलाई पीछे खुद स्वीकार किया। उसके बाद मैं साकार वतन में वापस आ गई। अच्छा। ओम् शान्ति।